ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम् विषय- हिन्दी

दिनांक-07/06/2020 क्षितिज-काव्य- खंड

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

शुभ प्रभात,

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

कल ,आप महान कवि माखनलाल चतुर्वेदी के संक्षिप्त जीवन से परिचित हुए। आज उनकी रचना 'कैदी और कोकिला' कविता का रसास्वादन करेंगे।

सच्चे देशभक्त कवि, माखनलाल चतुर्वेदी ने "कैदी और कोकिला" कविता की रचना उस समय की थी, जब हमारा

देश भारत ब्रिटिश शासन के अधीन गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था ।वे खुद भी एक स्वतंत्रता सेनानी थे, जिस कारण उन्हें कई बार जेल की यातना भी सहनी पड़ी थी ।जेल में रहने के दौरान, वे इस बात से अवगत हुए कि जेल जाने के बाद ,भारतीय स्वतंत्रता प्रेमियों के साथ कितना दुर्व्यवहार किया जाता है अपने हृदय की पीड़ा को उन दिनों कवि अपनी रचना के माध्यम से समस्त जनता के सामने लाते थे। इसी क्रम में चतुर्वेदी जी ने अपने मर्माहत भारतीयों की पीड़ा को इस रचना के द्वारा भारतवासियों के समक्ष प्रस्तुत किया। कवि ने “कैदी और कोकिला” कविता में, जेल में बंद स्वतंत्र भारत का सपना देखने वाले भारतीयों के साथ-साथ एक कोयल का भी वर्णन किया है, जहाँ जेल में भारतीयों से ब्रिटिश जी तोड़ मेहनत करवाते हैं, भूखे पेट रखते हैं, चैन की नींद नहीं सोने देते, चैन से जीने नहीं देते, वहीं कवि की कामना है कि ऐसी परिस्थिति में कोयल समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता का ,मुक्ति का गीत सुनाए।

कैदी और कोकिला

माखनलाल चतुर्वेदी

क्या गाती हो?

क्यों रह- रह जाती हो ?

कोकिल बोलो तो!

क्या लाती हो ?

संदेशा किसका है ?

कोकिल बोलो तो?

ऊँची काली दीवारों के घेरे में,

डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,

जीने को देते नहीं पेट- भर खाना,

मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना!

जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है ,

शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है?

हिमकर निराश कर चला रात भी काली,

इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली?

क्रमश:

शेष अगली कक्षा में ।

छात्र कार्य

- कविता को अपनी कॉपी में शुद्ध -शुद्ध व साफ-साफ लिखें।
- सुर के साथ कविता पाठ करें।
- कविता याद करें ।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”